फिस्टुला इन एनो या नासूर क्या है

फिस्टुला या नासूर यानी दो छेद एक छेद मलद्वार के बाहर त्वचा पर दायें बाएं या ऊपर नीचे तथा एक छेद मलद्वार के अन्दर होता है |

मलद्वार के चारो और दो मांसपेशिया होती है अन्दर वाली इन्टरनल स्फिंकटर तथा बाहर कि ओर एक्सटर्नल स्फिंकटर | इन दोनों के बीच एक जगह होती है ,जिसमे कुछ ग्रन्थियां होती है ,जिनमे म्यूकस नाम का एक चिकना पदार्थ पैदा होता है ,जो कि एक नलकी द्वारा मलद्वार के अन्दर खुलती है तथा ये मलद्वार की अन्दर की त्वचा को चिकना बनाने में सहायक होता हैं , जब इस नलकी में कोई रुकावट आ जाती है तो ये ग्रंथी इन्फेक्टेड हो जाती है तथा इसमें मवाद बन जाती है अब ये मवाद अपना रास्ता ढूंढती है तथा मलद्वार के बाहर त्वचा पर फूट कर एक छेद बना देती है , जब कभी इसमें मवाद इक्कठी हो जाती है तो दर्द का एहसास करवाती है अन्यथा चुपचाप एक छेद के रूप में पडी रहती है

फिस्टुला का आधुनिक ईलाज क्या है ?

फिस्टुला का ईलाज आधुनिक विधि द्वारा जैसे VAAFT तथा LIFT या कोर-सर्जरी द्वारा किया जाये तो फिस्टुला के दुबारा होने कि संभावना काफी कम हो जाती है

VAAFT क्या है

VAAFT यानी विडियो असिस्टेड एनल फिस्टुला ट्रीटमेंट : इस विधि में फिस्टुलोस्कोप यानी एक दूरबीन से फिस्टुला ट्रेक्ट या नासूर में बाहर के छेद में डाला जाता है तथा अन्दर के छेद तक जाकर पूरे ट्रेक्ट को मशीन से कुरेदकर साफ कर दिया जाता है तथा अन्दर के छेद को स्टेपलर से बंद कर दिया जाता है इस प्रकार यह छेद कुछ ही समय में भर जाता है

LIFT क्या है

LIFT यानी लाईगेसन ऑफ़ इन्टर स्फिंकटरीक फिस्टुलस ट्रेक्ट : इस विधि में मलद्वार के पास बाहर कि और एक छेद कर के ट्रेक्ट को बांध दिया जाता है तथा बीच में से काट दिया जाता है ,जिस से बाहर तथा भीतर का कनेक्सन खत्म हो जाता है तथा फिस्टुला होने कि संभावना काफी कम हो जाती है |

कोर सर्जरी क्या है

इस विधि में फिस्टुला का पूरा ट्रेक्ट निकल दिया जाता है , जिससे फिस्टुला के दोबारा होने कि संभावना काफी कम हो जाती है

क्या एक बार ऑपेरशन के बाद फिस्टुला पुन: हो सकता है ?

लिटरेचर के अनुसार इस बिमारी के पुन: होने कि संभावना 50% तक होती है ,परन्तु नई तकनीक व अनुभवी तथा ट्रेंड विशेषज्ञ द्वारा करने पर पुन: होने कि संभावना काफी हद तक कम हो जाती है

फिस्टुला का ऑपेरशन करवाने के बाद मरीज अपने काम पर कब लौट सकता है ?

फिस्टुला का ऑपेरशन करवाने के बाद मरीज अपने काम पर 48 घंटो के बाद जाने लायक हो जाता है , अब मरीज को काफी दिनों तक बिस्तर पर रहने कि आवश्यकता नहीं होती है